SATYA MicroCapital Ltd.

सर्वे भवन्तु सुखिनः

INSIDE SATYA

TOGETHER WE RISE

SCAN HERE

APRIL-JUNE 2026

Your Quarterly Infotainment Magazine

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

MISSION

“To be a preferred choice for the people at bottom of pyramid in creation of their enterprise and livelihood through holistic approach”

उद्देश्य

“सीमित सुविधा प्राप्त लोगों की आजीविका एवं उद्यम-विकास हेतु, बृहद दृष्टिकोण के साथ, एक प्राथमिक विकल्प होना।”

VISION

"To be a catalyst for the socio-economic upliftment & economic empowerment of 10 million households by the year 2030."

लक्ष्य

“वर्ष 2030 तक 1 करोड़ परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक उत्प्रेरक बनना।”

MOTTO

“May all be happy”

सिद्धांत

“सर्वे भवन्तु सुखिनः”

MD की कलम से

VIVEK TIWARI
CHAIRMAN, MD & CEO
SATYA MicroCapital Ltd.

प्रिय साथियों,

नमस्कार !!

नूतन वित्त वर्ष के शुभारंभ पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। आशा है कि आप सभी स्वस्थ, सुरक्षित एवं उत्साहपूर्ण मनोभाव के साथ इस नए वर्ष का स्वागत कर रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सभी इस वर्ष भी अपने उत्साह एवं समर्पण को बनाए रखते हुए नई ऊँचाइयों को प्राप्त करेंगे। यह वर्ष हम सभी के लिए नवीन संभावनाओं, सकारात्मक परिवर्तनों एवं उल्लेखनीय उपलब्धियों का मार्ग प्रशस्त करेगा। आपकी सतत प्रतिबद्धता एवं अथक परिश्रम के फलस्वरूप ही सत्या निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति हमारी प्रतिष्ठा है, जो हमारे प्रत्येक सहकर्मी एवं प्रत्येक ग्राहक के विश्वास पर आधारित है। इस प्रतिष्ठा का संरक्षण एवं संवर्धन हम सभी का सामूहिक दायित्व है। उत्कृष्ट सेवा, नवाचार, पारदर्शिता एवं प्रतिबद्धता, ये वे मूल स्तंभ हैं जिन पर सत्या की पहचान स्थापित है, और हमें इन्हीं सिद्धांतों के अनुरूप आगे बढ़ना है।

इस तिमाही का आरंभ हम 'INSIDE SATYA' पत्रिका के एक विशेष संस्करण के साथ कर रहे हैं, जिसका विषय है "Together We Rise"। यह विषय हमें यह स्मरण कराता है कि प्रगति कोई एकाकी यात्रा नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। विश्वास, सहयोग और एकता के माध्यम से ही हम अपने ग्राहकों और समुदायों को सशक्त बनाते हैं।

सत्या निरंतर अपने लक्ष्य "वर्ष 2030 तक 1 करोड़ परिवारों के सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक उत्प्रेरक होना" की दिशा में अग्रसर है। यह हमारे लिए मात्र एक लक्ष्य नहीं, अपितु आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में एक सशक्त आंदोलन है। हम यह भली-भांति समझते हैं कि प्रत्येक ऋण केवल एक वित्तीय लेन-देन नहीं, बल्कि किसी के स्वप्न को साकार करने का माध्यम है। इस यात्रा में चुनौतियाँ पूर्व में भी आई हैं और भविष्य में भी आएंगी, किन्तु जैसा कि आप सभी ने समय-समय पर सिद्ध किया है, सत्या की वास्तविक शक्ति उसका अडिग संकल्प एवं सुदृढ़ टीम भावना है। हम न कभी रुके हैं, न कभी झुके हैं, और भविष्य में भी अपने उद्देश्यों के प्रति समान रूप से प्रतिबद्ध रहेंगे।

आइए, इस नवीन वित्त वर्ष में हम एक और सशक्त संकल्प लें, एक ऐसे समावेशी समाज के निर्माण का, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर प्राप्त हों और वह अपने स्वप्नों को स्वतंत्रता के साथ साकार कर सके। आइए, हम सभी विश्वास, पारदर्शिता, अनुशासन, टीम भावना एवं उत्कृष्टता के मूल्यों के साथ अपने साझा लक्ष्यों की दिशा में नई ऊर्जा एवं दृढ़ संकल्प के साथ अग्रसर हों।

ढेरों शुभकामनाएं सहित
आपका
विवेक तिवारी

Together We Rise

The Essence of Rising Together

At SATYA, we have always believed that progress is not a solitary pursuit. It is a collective journey, built on the strength of many hands, united by a shared vision. The theme "Together We Rise" beautifully captures this philosophy, reflecting the very foundation of microfinance, where unity, trust, and collaboration transform lives.

Microfinance is more than financial inclusion; it is about building communities where every member uplifts the other, ensuring that growth is shared and sustainable. Across villages and towns, we witness inspiring stories of women entrepreneurs, small business owners, and families who have turned opportunities into milestones. Their journeys remind us that when one person rises, they carry with them the hopes and aspirations of many. This ripple effect is the true power of microfinance, it creates a chain of empowerment that strengthens households, communities, and ultimately, the nation.

At SATYA, teamwork is not limited to our internal culture; it extends to the very clients we serve. Members support each other, ensure accountability, and celebrate collective success. This spirit of unity mirrors our organizational values, where every department, every colleague, and every initiative contribute to the larger mission of financial empowerment.

The phrase **Together We Rise** is not just a slogan; it is a lived reality. It is seen in the determination of women who, for the first time, hold financial independence in their hands. It is reflected in the smiles of families who can now afford education for their children. It is echoed in the voices of communities that stand stronger because they stand together.

Microfinance as Collective Strength

Microfinance has emerged as one of the most powerful tools for social and economic transformation in communities that have traditionally been excluded from mainstream financial systems. At its heart, microfinance is not simply about providing small loans or financial services; it is about building collective strength. It is about enabling individuals to rise together, to support one another, and to create a foundation of resilience that extends far beyond monetary transactions.

The true essence of microfinance lies in its ability to empower individuals while simultaneously fostering a sense of community. When a woman in a rural village receives her first loan to start a small enterprise, she is not only investing in her own future but also contributing to the economic and social fabric of her community. Her success inspires others, and her repayment builds trust within the group. This interconnectedness is what makes microfinance unique, it thrives on collaboration, accountability, and shared progress.

One of the most impactful aspects of microfinance is the group lending model. Unlike traditional banking, where individuals are assessed in isolation, microfinance often brings people together in self-help groups or joint liability circles. These groups are more than financial arrangements; they are support systems. Members encourage one another, share knowledge, and stand as guarantors for each other's success. This collective responsibility instills discipline and strengthens bonds, ensuring that progress is not limited to one person but extends to the entire group.

The impact of this collective strength is visible in countless ways. Women who once hesitated to step outside their homes now lead small businesses, manage finances, and make decisions that shape their families' futures. Families that once lived on the margins now send their children to school, breaking cycles of poverty and opening doors to new opportunities. Each of these stories is powerful on its own, but together they form a narrative of transformation that is both inspiring and enduring.

Microfinance also nurtures resilience. Many clients face challenges such as irregular incomes, social barriers, or limited access to markets. Yet, by standing together, they discover strength in unity. When one member falters, others step in to provide support. When a community faces adversity, the collective spirit helps them adapt and recover. This resilience is not just financial; it is emotional and social. It is the courage to dream bigger because you know you are not alone.

For organizations engaged in microfinance, this collective strength is equally vital. Success is not built on individual efforts alone but on collaboration across every level, from leadership to field officers, from clients to communities. Every loan disbursed, every training conducted, and every milestone achieved is a testament to the fact that progress is shared.

Ultimately, microfinance teaches us a profound lesson: progress is sweetest when shared. It reminds us that true empowerment is not about rising alone but about rising together. And it shows us that when communities unite, their collective strength can overcome barriers, transform lives, and create a future filled with hope and opportunity.

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

SATYA Snapshot

26
NUMBER OF STATES

351
NUMBER OF DISTRICTS

731
NUMBER OF BRANCHES

72,698
NUMBER OF VILLAGES

1,66,301
NUMBER OF CENTERS

6,73,809
(EXCLUDING SALE OF LOANS TO ARC)
NO. OF CLIENTS

6,98,538
(EXCLUDING SALE OF LOANS TO ARC)
NUMBER OF ACTIVE LOANS

RS. 19,236.3CR
TOTAL DISBURSEMENTS (INR CR.)

RS 1,964.22 CR
(EXCLUDING SALE OF PORTFOLIO TO ARC)
PORTFOLIO OUTSTANDING (INR CR.)

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

मन की बात

अम्मा ऐसी साथी ढूंढो ना
मेरे नाव की माँझी ढूंढो ना,
प्यार करे तो ज्यादा करदे
मेरे ग़म को आधा करदे,
अपने परिवार की ढाल रही हो
पिता के सम्मान की भाल रही हो,
चलती राह में जो हाथ ना छोड़े
जिन्दगी के सफर में जो साथ ना छोड़े,
अम्मा ऐसी साथी ढूंढो ना
मेरे नाव की माँझी ढूंढो ना,..
जो मेरी माँ को माँ ही समझे
ना बोलूँ तो ना ही समझे,
जो मेरे मकान को घर करदे
जीवन मे मेरी खुशियाँ भर दे,
मेरा बेटा जिससे बोले
अपने जैसी साथी ढूंढो ना,
अम्मा ऐसी साथी ढूंढो ना
मेरे नाव की माँझी ढूंढो ना...

SAVAN DADSENA EDO

फनकार

ESHA SONIYAL, SPM DEPARTMENT

पंचतंत्र की कहानियां

इस कॉलम के माध्यम से हम हर संस्करण में आपके लिए पंचतंत्र की एक कहानी प्रकाशित करेंगे।

आज की कहानी का शीर्षक है: **"टिटिहरी का जोड़ा और समुद्र का अभिमान"** जो पंचतंत्र भाग - एक मित्रभेद से ली गयी है।

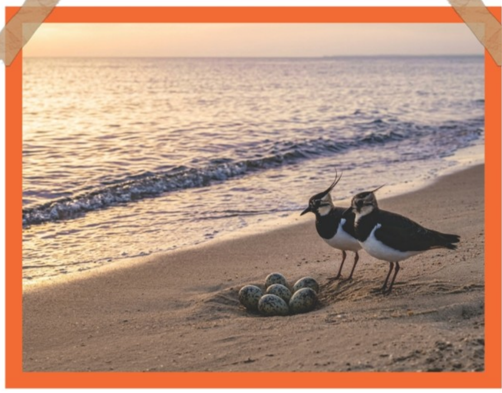

एक समुद्र के किनारे टिटिहरी (एक प्रकार का छोटा पक्षी) का एक जोड़ा रहता था। जब टिटिहरी के अंडे देने का समय आया, तो उसने अपने पति से कहा, "हमें अंडों के लिए समुद्र के तट से दूर कोई सुरक्षित जगह ढूंढनी चाहिए, क्योंकि यहाँ समुद्र की लहरें हमारे अंडों को बहा ले जा सकती हैं।"

टिटिहरी के पति ने गर्व से कहा, "अरे भाग्यवान! इस समुद्र की इतनी हिम्मत कहाँ कि वह मेरे बच्चों को नुकसान पहुँचाए? तुम यहीं निश्चिंत होकर अंडे दो।" टिटिहरी ने वहीं रेत पर अंडे दे दिए।

समुद्र ने टिटिहरे की ये बातें सुनलीं। उसने सोचा - "यह टिटिहरा बहुत अभिमानी है। आकाश की ओर टांगें करके भी यह इसीलिये सोता है कि इन टांगों पर गिरते हुए आकाश को थाम लेगा। इसके अभिमान का भंग होना चाहिये।" यह सोचकर उसने ज्वार आने पर टिटिहरी के अंडों को लहरों में बहा दिया।

टिटिहरी जब दूसरे दिन आई तो अंडों को बहता देखकर रोती-बिलखति टिटिहरे से बोली - "मूर्ख ! मैंने पहिले ही कहा था कि समुद्र की लहरें इन्हें बहा ले जायंगी। किन्तु तूने अभिमानवश मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। अपने प्रियजनों के कथन पर भी जो कान नहीं देता उसकी दुर्गति होती ही है।

इसके अतिरिक्त बुद्धिमानों में भी वही बुद्धिमान सफल होते हैं जो बिना आई विपत्ति का पहले से ही उपाय सोचते हैं, और जिनकी बुद्धि तत्काल अपनी रक्षा का उपाय सोच लेती है। 'जो होगा, देखा जायगा' कहने वाले शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।"

यह बात सुनकर टिटिहरे ने टिटिहरी से कहा - मैं 'यद्भविष्य' जैसा मूर्ख और निष्कर्म नहीं हूँ। मेरी बुद्धि का चमत्कार देखती जा, मैं अभी अपनी चोंच से पानी बाहिर निकाल कर समुद्र को सुखा देता हूँ।"

टिटिहरी - "समुद्र के साथ तेरा वैर तुझे शोभा नहीं देता। इस पर क्रोध करने से क्या लाभ ? अपनी शक्ति देखकर हमे किसी से बैर करना चाहिये। नहीं तो आग में जलने वाले पतंगे जैसी गति होगी।"

टिटिहरा फिर भी अपनी चोंचों से समुद्र को सुखा डालने की डींगें मारता रहा। तब, टिटिहरी ने फिर उसे मना करते हुए कहा कि जिस समुद्र को गंगा-यमुना जैसि सैंकड़ों नदियां निरन्तर पानी से भर रही हैं उसे तू अपने बूंद-भर उठाने वाली चोंचों से कैसे खाली कर देगा ?

टिटिहरा तब भी अपने हठ पर तुला रहा। तब, टिटिहरी ने कहा - "यदि तूने समुद्र को सुखाने का हठ ही कर लिया है तो अन्य पक्षियों की भी सलाह लेकर काम कर। कई बार छोटे छोटे प्राणी मिलकर अपने से बहुत बड़े जीव को भी हरा देते हैं; जैसे चिड़िया, कठफोड़े और मेंढक ने मिलकर हाथी को मार दिया था।

टिटिहरा - "अच्छी बात है । मैं भी दूसरे पक्षियों की सहायता से समुद्र को सुखाने का यत्न करूँगा।"

यह कहकर उसने बगुले, सारस, मोर आदि अनेक पक्षियों को बुलाकर अपनी दुःख-कथा सुनाई। उन्होंने कहा - "हम तो अशक्त हैं, किन्तु हमारा मित्र गरुड़ अवश्य इस संबन्ध में हमारी सहायता कर सकता है। 'तब सब पक्षी मिलकर गरुड़ के पस जाकर रोने और चिल्लाने लगे - "गरुड़ महाराज ! आप के रहते हमारे पक्षिकुल पर समुद्र ने यह अत्याचार कर दिया। हम इसका बदला चाहते हैं। आज उसने टिटिहरी के अंडे नष्ट किये हैं, कल वह दूसरे पक्षियों के अंडों को बहा ले जायगा। इस अत्याचार की रोक-थाम होनी चाहिये। अन्यथा संपूर्ण पक्षिकुल नष्ट हो जायगा।"

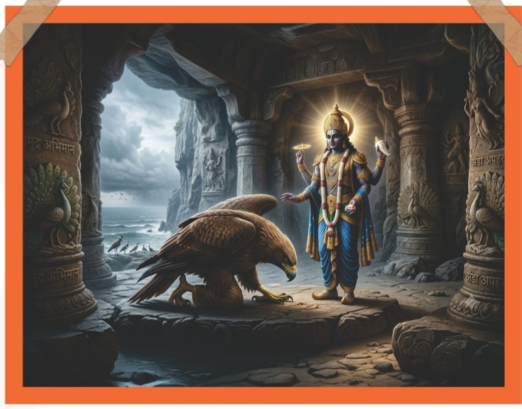

गरुड़ ने पक्षियों का रोना सुनकर उनकी सहायता करने का निश्चय किया । उसी समय उसके पास भगवान्विष्णु का दूत आया। उस दूत द्वारा भगवान विष्णु ने उसे सवारी के लिये बुलाया था। गरुड़ ने दूत से क्रोधपूर्वक कहा कि वह विष्णु भगवान को कह दे कि वह दूसरी सवारी का प्रबन्ध कर लें । दूत ने गरुड़ के क्रोध का कारण पूछा तो गरुड़ ने समुद्र के अत्याचार की कथा सुनाई।

दूत के मुख से गरुड़ के क्रोध की कहानी सुनकर भगवान विष्णु स्वयं गरुड़ के घर गये। वहाँ पहुँचने पर गरुड़ ने प्रणामपूर्वक विनम्र शब्दों में कहा - "भगवन् ! आप के आश्रम का अभिमान करके समुद्र ने मेरे साथी पक्षियों के अंडों का अपहरण कर लिया है। इस तरह मुझे भी अपमानित किया है । मैं समुद्र से इस अपमान का बदला लेना चाहता हूँ।"

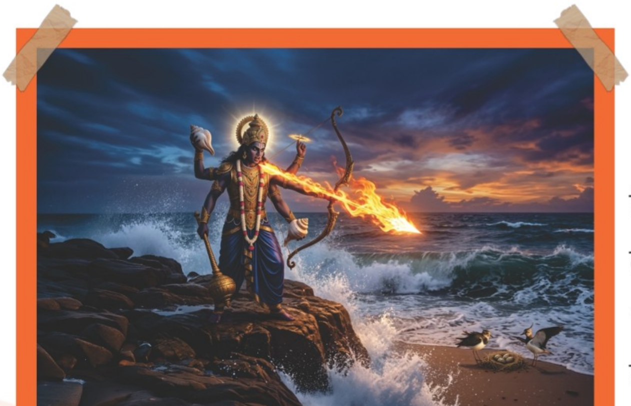

भगवान विष्णु बोले - "गरुड़ ! तुम्हारा क्रोध युक्तियुक्त है । समुद्र को ऐसा काम नहीं करना चाहिये था।

चलो, मैं अभी समुद्र से उन अंडों को वापिस लेकर टिटिहरी को दिलवा देता हूँ। उसके बाद हमें अमरावती जाना है।"

तब भगवान ने अपने धनुष पर 'आग्नेय' बाण को चढ़ाकर समुद्र से कहा- "दुष्ट! अभी उन सब अंडों को वापिस देदे, नहीं तो तुझे क्षण भर में सुखा दूंगा।"

भगवान विष्णु के भय से समुद्र ने उसी क्षण अंडे वापिस दे दिये।

कहानी से सीख

यदि मनुष्य का उत्साह, संकल्प और आत्मविश्वास अटूट हो, तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे हरा नहीं सकती। मुश्किल कितनी भी बड़ी क्यों न हो, दृढ़ निश्चय के सामने बड़े से बड़े अभिमानी को भी झुकना पड़ता है।

किस्सागोई

अकबर-बीरबल की कहानी: आदमी एक, काम चार

बीरबल की सूझबूझ, बुद्धी और हाजिरजवाबी से जहां बादशाह अकबर प्रसन्न थे, वहां दरबार के अन्य लोगों में कई ऐसे भी थे जो बीरबल को उच्च पद से हटाना तथा बादशाह की दृष्टि में गिराना चाहते थे। वे लोग ऐसे ही अवसर की ताक में रहते थे, जब वे बादशाह के कान भर सकें या किसी भी तरह बीरबल को नीचा दिखा सकें। ऐसे अवसर अक्सर आते भी रहते थे। एक बार बीरबल की अनुपस्थिति में बादशाह के कान भरने वालों ने एक स्वर में कहा- 'हमारी समझ में आज तक नहीं आया है कि जहांपनाह कि हम लोगों में क्या कमी है?' बीरबल को इतना महत्व क्यों दिया जाता है? क्या वह हमसे ज्यादा विद्वान है?'

'बहुत फर्क है उसमें और आप लोगों में।' बादशाह ने मुंह खोला दिया।

'जानने की इच्छा है, हुजूर!'

'अच्छा, फर्क जानना चाहते हो?'

'हां, हुजूर!'

'फर्क दिखाया जाएगा। इसी समय बीरबल के पास सूचना भेज दो, वह सात दिनों के लिए छुट्टी पर रहें तथा दरबार में न आएं। तुम लोगों में जो सबसे चतुर हो वह उनके स्थान पर काम करे, उनकी कुर्सी पर विराजमान हो। इस एक हफ्ते में हम फर्क का अहसास करा देंगे।'

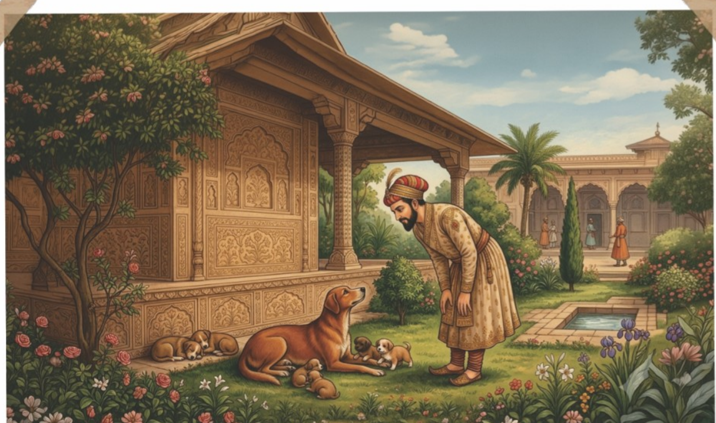

ऐसा ही किया गया। उन लोगों में जो सबसे चतुर था, उसे बीरबल के स्थान पर नियुक्त कर दिया गया। बीरबल की हफ्तेभर के लिए छुट्टी कर दी गई। बादशाह उन सबकी परीक्षा लेने का उचित अवसर और परीक्षा का विषय खोजते रहे। एक सप्ताह खत्म होने को आ गया। छठा दिन था। बादशाह ने दरबारियों को एकत्र कर उनके द्वारा चुने गए उस चतुर व्यक्ति से कहा -'हमारे महल के पिछले हिस्से में कुतिया के बच्चों की-सी अवाजें आती रहती हैं- देखकर आओ माजरा क्या है?'

'बहुत अच्छा हुजूर!' कहकर चतुर व्यक्ति चला गया।

थोड़ी देर बाद लोटा।

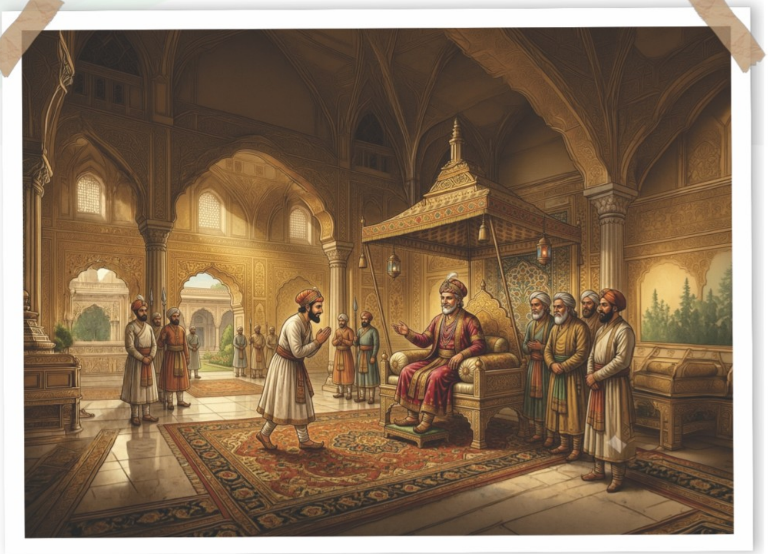

बादशाह ने मुस्कराकर पूछा - 'क्या माजरा है?'

'कुतिया ने बच्चे दिए हैं हुजूर! वे ही 'कूं-कूं' करते रहते हैं।'

'वे कितने बच्चे हैं?' बादशाह ने पूछा।

'हुजूर! मैंने तो गिने नहीं।'

'जाओ, गिनकर आओ।'

व्यक्ति आज्ञा पाकर दोबारा गया और थोड़ी देर बाद लौटा आया। आते ही बोला - 'जहांपनाह! पांच बच्चे दिए हैं कुतिया ने। मैं स्वयं गिनकर आया हूं।'

'गिन आए?'

'जी हां।'

'अच्छा तो तुमने यह भी जरूर देखा होगा कि उनमें कितने नर हैं और कितने मादा?' बादशाह ने मुस्कराकर कहा।

व्यक्ति चकरा गया। वह बोला - 'हुजूर! यह तो देखा नहीं।'

'देखकर आओ।'

व्यक्ति तीसरी बार गया और यह देखकर आया कि बच्चों में कितने नर और कितने मादा थे।

'हुजूर! दो नर और तीन मादाएं।'

'अच्छा, जो नर है उनके रंग कैसे-कैसे हैं?'

'जी?' वह व्यक्ति पुनः घूमने लगा।

'मैंने दोनों नर बच्चों के रंग पूछे हैं।' बादशाह ने कहा।

'जी, यहीं तक याद है, उनमें से एक तो काला है और एक शायद सफेद। जरा मैं एक बार फिर देख आता हूं।' और व्यक्ति चौथी बार गया। आकर बताया कि नर काला-सफेद और दूसरी बादामी, मादाओं में से दो काली और एक बादामी है।

'बैठ जाइए।' बादशाह ने कहा।

व्यक्ति बैठ गया।

'अब बीरबल को यहां बुलाया जाए।' बादशाह ने आदेश दिया।

बीरबल ने आते ही कहा- 'हुजूर! अभी तो एक दिन और बाकी है, मैं परसों अपने आप ही आ जाता।'

'जरूरी काम है।'

'सेवा बताइए।'

'हमारे महल के पीछे के भाग में अजीब-सी आवाजें आती हैं- जैसे कभी कुतिया के भौंकने की, कभी कुतिया के बच्चों की 'कूं-कूं', कभी गुर्राने की। देखकर आओ, माजरा क्या है? जरा जल्दी लौटना।'

'अच्छा जहांपनाह?' बीरबल चले गए। बीरबल जब लौटे तो बादशाह ने प्रश्न किया - 'क्या माजरा है?'

'कुतिया ब्याही है, पांच बच्चे दिए हैं, वे सब 'कूं-कूं' करते हैं, कुतिया गुर्राती या भौंकती रही होगी रात में, कोई बात नहीं है वहां।'

'पांच बच्चे हैं, उनमें नर-मादा कितने-कितने हैं?'

'दो नर, तीन मादाएं हैं।' बीरबल ने बताया।

'रंग किस प्रकार के हैं?'

'एक नर काला-सफेद दूसरा बादामी, मादाएं दो काली और एक बादामी है।'

बीरबल का उत्तर सुनकर बादशाह प्रसन्न

हो गए। उन्होंने अपने दिल पर गर्व किया कि उन्हें एक बुद्धीमान व्यक्ति मिला है जो उनके साथ रहता है। अपनी प्रसन्नता दबाए

हुए बोले - 'अब तुम लोग समझ गए होंगे कि तुम में और बीरबल में क्या फर्क है? क्यों श्रीमानजी?'

'जी।' व्यक्ति का सिर झुक गया। जिस काम को वह चार बार में कर सका था और ढाई घण्टा लगाया था, उसे बीरबल ने एक ही बार में केवल आधे घण्टे में कर दिया था। वह समझ गया कि उनमें और बीरबल में क्या फर्क है। बीरबल ने जो मान पाया है, अपनी योग्यता के बल पर पाया है।

क्लाइंट स्टोरी

कर्नाटक के नीलसंध्रा गाँव को "गोम्बेगला ऊरु" यानी "टॉय-सिटी" कहा जाता है। यहाँ की पहचान है लकड़ी से बने रंगीन खिलौने, जिनकी परंपरा पीढ़ियों से चली आ रही है। गांव में इस परंपरा को आगे बढ़ने का काम लक्ष्मम्मा ने किया। बचपन से उन्हें लकड़ी के खिलोने बनाने का शोक था, विवाह के बाद भी उन्होंने अपने इस शोक को ज़िंदा रखा और इसे अपना जीवन कार्य बनाया। लेकिन कला और मेहनत के बावजूद, सीमित संसाधनों के कारण उनका व्यवसाय आगे नहीं बढ़ पा रहा था। यही वह मोड़ था जब SATYA उनके जीवन में आई। स्थानीय ईडीओ ने उन्हें SATYA से जोड़ा और लक्ष्मम्मा ने गाँव की नौ अन्य महिलाओं के साथ मिलकर एक समूह बनाया। प्रत्येक महिला को ₹50,000 का ऋण मिला।

लक्ष्मम्मा | नीलसंध्रा, कर्नाटक

इस सहयोग ने लक्ष्मम्मा को नई दिशा दी। उन्होंने अधिक कच्चा माल खरीदा, उत्पादन बढ़ाया और अपने खिलौनों को गाँव से बाहर भी बेचना शुरू किया। हाईवे किनारे की दुकानों तक पहुँचने से उनके ग्राहक बढ़े और कारोबार में नई ऊर्जा आई।

आज लक्ष्मम्मा प्रतिदिन ₹500–600 की आय अर्जित करती हैं। इस स्थिर आय ने उनके परिवार की स्थिति सुधारी और उन्हें अपने हुनर पर आत्मविश्वास दिया। उनकी सफलता देखकर गाँव की अन्य महिलाएँ भी अपने छोटे-छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित हुईं।

लक्ष्मम्मा की यात्रा यह साबित करती है कि सही समय पर मिला सहयोग न केवल जीवन बदल सकता है, बल्कि पूरे समुदाय को नई राह दिखा सकता है। SATYA के साथ जुड़कर उन्होंने अपने सपनों को साकार किया और अपने गाँव की महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गईं।

«« Rare & Unique Facts of the World »»

Shortest War in History

The Anglo-Zanzibar War holds the record for brevity. On August 27, 1896, following a succession dispute, the British delivered an ultimatum to the Sultan. When it expired at 9:00 AM, British cruisers began a heavy bombardment of the palace. By 9:38 AM, the Sultan's forces had surrendered, and the conflict was over.

Scotland's National Animal Is a Unicorn

In Scottish heraldry, the unicorn is not a fluffy myth but a symbol of grand power, purity, and untamable spirit. It was chosen as the national animal in the late 1300s. Interestingly, in the Royal Coat of Arms of the United Kingdom, the Scottish unicorn is always depicted bound by a golden chain, symbolizing that the dangerous, wild creature has been tamed by the true king.

Sunsets on Mars Are Blue

While Earthly sunsets are famous for dramatic reds and oranges, a sunset on Mars would appear distinctly bluish to human eyes. This phenomenon is caused by the fine dust suspended in the thin Martian atmosphere. This dust absorbs blue light and scatters warmer colors during the day, but at sunset, when the light path is longest, the blue light is scattered *less* than the red, concentrating a cool blue glow around the setting Sun.

Fruit Flies Were First in Space

Before readying human astronauts or even dogs, scientists needed to understand the impact of space radiation on living tissue. On February 20, 1947, the U.S. launched a V-2 rocket carrying a payload of fruit flies. The rocket reached an altitude of 67 miles (108 km), officially entering space, before the capsule parachuted back. The flies were recovered alive, proving that cosmic radiation exposure was not immediately fatal.

SATYA
सर्वे भवन्तु सुखिनः

Snakes Detect Earthquakes

Snakes possess an extraordinary sensitivity to seismic activity. Research confirms they can detect low-frequency P-waves (the compressional waves that precede an earthquake) from as far as 75 miles (120 km) away. Their ability to sense these vibrations, which are imperceptible to humans, allows them to react and often evacuate their dens days before the main tremor occurs.

Ancient Dentistry

Dentistry is far older than many people realize. Archaeological evidence from Mehrgarh, Pakistan, reveals that as early as 7000 BCE, Neolithic artisans used primitive bow-drills tipped with flint bits to drill precise holes into human molars, presumably to treat decay or relieve pressure.

Eiffel Tower Grows in Summer

The Eiffel Tower is not of a constant height. It is constructed from puddled iron, a material highly susceptible to thermal expansion. When temperatures rise in the summer, the kinetic energy of the iron atoms increases, causing them to take up more space. This expansion can cause the entire structure to physically grow by up to 15 centimeters (6 inches) in height.

Banana Is a Berry

The definition of “berry" is confusing. Botanically, a berry is a fleshy fruit that develops from a single flower with one ovary. This group includes bananas, watermelons, and even tomatoes. However, strawberries and raspberries are *not* berries; they are "aggregate fruits" that form from a single flower with *multiple* ovaries. A true berry, like the banana, has an exocarp (peel), mesocarp (fleshy middle), and an endocarp (innermost layer holding the seeds).

Octopuses Have Three Hearts

To power their complex bodies and blue, copper-based blood (hemocyanin), octopuses utilize three distinct hearts. Two specialized branchial hearts pump deoxygenated blood to the gills. The oxygenated blood then travels to a single central systemic heart, which pumps it to the rest of the body. Interestingly, the main systemic heart *stops beating* when the octopus swims, which is likely why they prefer crawling, as swimming is highly exhausting.

Tongue Prints Are Unique

Every person's tongue print is distinct, featuring a one-of-a-kind combination of shape and texture. While fingerprints remain the standard, researchers are developing 3D tongue imaging as a non-forgeable biometric tool for high-security systems.

Platypuses Secrete Milk Through Skin

Female platypuses are unique mammals; to feed their young (called puggles), milk is secreted through specialized sweat glands on their abdomen. The milk pools in skin folds, and the babies simply lap it up from the mother's fur.

Sharks Existed Before Trees

Sharks are evolutionary survivors. The earliest fossil evidence for sharks dates back over 400 million years to the Devonian period. This means they were established apex predators in the oceans long before the first primitive trees (like *Archaeopteris*) evolved on land, which occurred roughly 385 million years ago. Sharks predated trees, and they also predated dinosaurs.

Water Can Boil and Freeze at Once

This seems impossible, but it occurs at a precise condition called the "triple point." For pure water, this happens at a temperature of 0.01°C (273.16 K) and a very low pressure of 611.657 pascals (about 0.006 atmospheres). At this unique intersection, all three phases of water, solid ice, liquid water, and gaseous steam, coexist in a stable equilibrium, allowing all three phase changes to happen simultaneously.

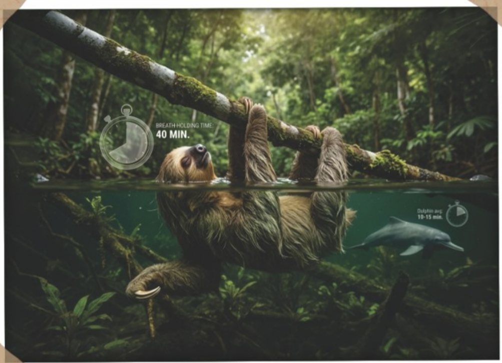

Sloths Can Hold Breath Longer Than Dolphins

This is a surprising comparison. While dolphins are highly adapted marine mammals, they typically hold their breath for 8 to 10 minutes (with a maximum of around 15). Sloths, however, are surprisingly excellent swimmers and can slow their heart rate to one-third of their normal pace. This, combined with their extremely slow metabolism, allows them to hold their breath underwater for up to 40 minutes.

Venus Spins Backwards

In our solar system, most planets, including Earth, rotate counter-clockwise (prograde) as viewed from the north pole. This means the Sun rises in the east. Venus, however, is a notable exception. It experiences retrograde rotation, spinning clockwise on its axis. This axial tilt is extremely high (177 degrees), effectively meaning it is upside down. On Venus, the Sun rises in the west and sets in the east.

Wombat Poop Is Cube-Shaped

Wombats are the only known animals in the world that produce cubic scat. This is not due to a rectangular anus, but rather the unique, variable elasticity and structure of their final section of intestine. As the feces dry out, rhythmic contractions of the gut sculpt the material into distinct cubes. This adaptation allows the wombats to strategically place scat on rocks or logs to mark territory without it rolling away.

Antarctica Has No Official Time Zone

Time is a construct, especially at the South Pole. Antarctica sits on all lines of longitude simultaneously. However, the continent has no single, officially recognized time zone. Instead, the various research stations scattered across the ice use the time zone of either their home country, the specific supply base they are coordinated with (e.g., McMurdo uses New Zealand time), or whatever is practical for their operations. This leads to a patchwork of "local" times across the ice.

Peanuts Aren't Nuts

Despite the name, peanuts are botanically classified as legumes, belonging to the same family (*Fabaceae*) as beans, lentils, and soy. They develop in a very specific way: after pollination, the flower stalks (pegs) elongate and push the developing ovaries *underground*, where the peanut pods mature. A true botanical nut (like an acorn or hazelnut) is a hard-shelled dry fruit that does not split open at maturity.

Butterflies Taste with Their Feet

Butterflies possess gustatory (taste) receptors not just on their mouthparts, but also on their tarsi, their feet. These specialized chemo sensors allow them to "taste" a plant simply by landing on it. This is crucial for survival: female butterflies use their feet to confirm that a leaf belongs to the specific host plant required for their caterpillars before they commit to laying their eggs.

Jellyfish Are Older Than Dinosaurs

Jellyfish are among the most ancient and successful multicellular life forms on Earth. Fossil evidence from Utah dates back over 500 million years to the Cambrian period. This means that a recognizable "jellyfish" form was drifting through the oceans *before* the first fish evolved, *before* plants moved onto land, and at least 250 million years *before* the first dinosaurs appeared.

The Sahara Desert Was Once Green

The Sahara has not always been a vast sea of sand. Between roughly 11,000 and 5,000 years ago, a period known as the "African Humid Period" or "Green Sahara" occurred. Due to subtle shifts in Earth's orbital tilt, the African monsoon season strengthened significantly, bringing abundant rain. This transformed the entire region into a lush landscape of grasslands, major river systems, and massive lakes, supporting diverse wildlife and human settlements, as documented by ancient rock art found in the region today.

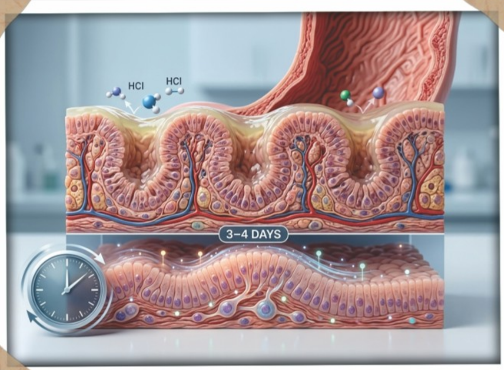

Your Stomach Gets a New Lining Every Few Days

The inside of your stomach is a hostile environment, containing hydrochloric acid (HCl) powerful enough to dissolve metal. This acid is necessary for digestion, but it would also digest the stomach itself. To prevent this, the stomach lining is coated in a thick, bicarbonate-rich mucus layer. Furthermore, the epithelial cells that form this lining regenerate with incredible speed. Every 3 to 4 days, the entire lining is completely replaced, ensuring that any damage from the acid is rapidly repaired.

There's a Lake Under the Ocean

This phenomenon, called a "brine pool," exists on the deep seafloor, such as in the Gulf of Mexico. These pools are depressions filled with water that is extremely dense due to a high concentration of salt (often four to five times saltier than the surrounding seawater). This difference in density causes the brine to settle and form a distinct, shimmering "lake" with its own shoreline, surface, and even waves, separated from the overhead ocean. The environment is extremely hostile and toxic to most marine life, effectively creating a deadly lake within the sea.

मानसून केयर: सेहत भी, सुरक्षा भी

तपती गर्मी से राहत लेकर आने वाला मानसून का मौसम हर किसी के मन को लुभाता है। रिमझिम बारिश, चारों तरफ बिखरी हरियाली और चाय-पकोड़ों का दौर इस मौसम को बेहद खूबसूरत बना देता है। लेकिन इसी सुहावने मौसम के पीछे बीमारियों का प्रकोप और सड़क हादसों का जोखिम भी छुपा होता है। इस अंक में हम आपको बताने जा रहे हैं कि इस मानसून में खुद को और अपने परिवार को कैसे सुरक्षित रखें।

1. **स्वास्थ्य और आहार: बीमारियों से रहें दूर** मानसून में हवा और पानी के जरिए संक्रमण फैलने का खतरा सबसे ज्यादा होता है। इस मौसम में डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड और गैस्ट्रोएंटेराइटिस (पेट का संक्रमण) जैसी बीमारियां तेजी से पैर पसारती हैं।
   - **उबला हुआ पानी पीएं :** इस मौसम में जल जनित बीमारियों से बचने के लिए पानी को उबालकर या अच्छे फिल्टर का उपयोग करके ही पीएं। बाहर के खुले पानी और बर्फ से पूरी तरह परहेज करें।
   - **ताजा भोजन अपनाएं :** बासी भोजन में बैक्टीरिया बहुत जल्दी पनपते हैं। हमेशा गरमा-गरम और ताजा पका हुआ भोजन ही खाएं। कच्चे सलाद और कटी हुई सब्जियों को बाहर खाने से बचें।
   - **इम्यूनिटी मजबूत करें :** अपने आहार में अदरक, तुलसी, हल्दी, लहसुन और विटामिन-सी से भरपूर खट्टे फलों को शामिल करें ताकि मौसमी फ्लू से बचाव हो सके।

2. **मच्छरों और जलभराव से सुरक्षा** रुका हुआ पानी मच्छरों का सबसे बड़ा प्रजनन स्थल होता है, जो गंभीर महामारियों का कारण बनता है।
   - **आसपास सफाई रखें :** घर के कूलरों, पुराने टायरों, गमलों और छतों पर पानी जमा न होने दें। हर हफ्ते इन्हें खाली कर सुखाने की आदत डालें।
   - **सुरक्षात्मक उपाय :** सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें या मॉस्किटो रिपेलेंट (मच्छर भगाने वाली क्रीम/लिक्विड) का इस्तेमाल करें। पूरी आस्तीन के कपड़े पहनना इस मौसम में सबसे बेहतर होता है।

3. **सड़क सुरक्षा : सावधानी हटी, दुर्घटना घटी** बारिश के दिनों में सड़कें फिसलन भरी हो जाती हैं और दृश्यता (विजिबिलिटी) काफी कम हो जाती है। ऐसे में वाहन चलाते समय अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता होती है।
   - **गति सीमा पर नियंत्रण :** गीली सड़कों पर वाहनों की ब्रेकिंग क्षमता कम हो जाती है। इसलिए गति हमेशा सामान्य से कम रखें और आगे चल रहे वाहन से सुरक्षित दूरी बनाए रखें ताकि अचानक ब्रेक लगाने पर गाड़ी स्किड (फिसल) न हो।
   - **वाहन की तकनीकी जांच :** मानसून शुरू होने से पहले ही अपने वाहन के वाइपर्स, टायरों की ग्रिप और ब्रेक की अच्छी तरह जांच करवा लें। घिसे हुए टायर गाड़ी का संतुलन बिगाड़ सकते हैं।

- **हेडलाइट्स और इंडिकेटर्स का सही प्रयोग :** भारी बारिश के दौरान दिन में भी अपनी लो-बीम हेडलाइट्स और फॉग लाइट्स चालू रखें ताकि सामने और पीछे से आ रहे वाहनों को आपकी स्थिति स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके।

4. **बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से सावधानी** बारिश के पानी के कारण दीवारों में सीलन आ जाती है, जिससे घरों और सार्वजनिक स्थानों पर बिजली का करंट फैलने का खतरा बढ़ जाता है। **गीले हाथों से उपकरणों से दूरी :** कभी भी गीले हाथों या नंगे पैर बिजली के स्विच, प्लग या बोर्ड को न छुएं। घर के मुख्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के पास वॉटरप्रूफिंग का ध्यान रखें।

- **बाहरी खंभों से दूरी :** राह चलते समय सड़कों पर लगे लोहे के बिजली के खंभों, ट्रांसफार्मर या लटकते हुए तारों से पर्याप्त दूरी बनाए रखें और बच्चों को इनसे दूर रहने की हिदायत दें।

महत्वपूर्ण नोट: सड़क पर चलते समय कभी भी जलभराव वाले रास्तों पर पैदल चलने का जोखिम न उठाएं। पानी के नीचे खुला हुआ मैनहोल या बिजली का टूटा हुआ तार जानलेवा साबित हो सकता है।

5. **मानसून स्किन केयर: त्वचा की रंगत बनाए रखें** इस मौसम में बढ़ने वाली उमस (Humidity) और हवा में नमी के कारण त्वचा चिपचिपी हो जाती है, जिससे फंगल इन्फेक्शन, मुंहासे (Acne) और एलर्जी की समस्या काफी बढ़ जाती है।

- **नियमित क्लींजिंग :** राह चलते समय सड़कों पर लगे लोहे के बिजली के खंभों, ट्रांसफार्मर या लटकते हुए तारों से पर्याप्त दूरी बनाए रखें और बच्चों को इनसे दूर रहने की हिदायत दें।
- **एंटी-फंगल और सनस्क्रीन :** बारिश के मौसम में बादलों के बावजूद यूवी किरणें त्वचा को नुकसान पहुंचाती हैं, इसलिए जेल-बेस्ड सनस्क्रीन जरूर लगाएं। पसीने और नमी वाले हिस्सों पर फंगल इन्फेक्शन से बचने के लिए एंटी-फंगल पाउडर का इस्तेमाल करें।

मानसून का मौसम प्रकृति के उत्सव का समय है। यदि हम अपनी दिनचर्या में स्वास्थ्य के प्रति थोड़ी सी जागरूकता और सड़क पर चलते समय थोड़ी सी समझदारी शामिल कर लें, तो इस खूबसूरत मौसम का आनंद बिना किसी रुकावट या परेशानी के लिया जा सकता है। सतर्क रहें, स्वस्थ रहें और इस मानसून को सुरक्षित व यादगार बनाएं!

Recipes

मानसून का आगमन अपने साथ तपती गर्मी से राहत और प्रकृति में एक नया जीवन लेकर आता है। आसमान में छाए घने काले बादल, रिमझिम गिरती बारिश की बूंदें और मिट्टी की वो सोंधी-सोंधी महक पूरे माहौल को एक अलग ही जादुई और खुशनुमा अहसास से भर देती है। इस मौसम में चारों तरफ फैली हरियाली आंखों को सुकून देती है, तो वहीं ठंडी हवा के झोंके मन को प्रफुल्लित कर देते हैं। मानसून का यह खूबसूरत मिजाज हमारे खान-पान की इच्छाओं को भी पूरी तरह बदल देता है। यहाँ दो बेहद अनोखे, पारंपरिक और पूरी तरह से शाकाहारी व्यंजनों की विधि दी गई है, जो इस मौसम के स्वाद को कई गुना बढ़ा देंगे।

अरबी के पात्रा

यह एक पारंपरिक व्यंजन है जो वर्षा ऋतु में उगने वाले ताजे अरबी के पत्तों से बनाया जाता है। इन पत्तों पर बेसन और मसालों का खट्टा-मीठा पेस्ट लगाकर रोल किया जाता है, फिर भाप में पकाकर कुरकुरा होने तक तला जाता है।

आवश्यक सामग्री

- **मुख्य सामग्री:** 6-8 ताजे और मध्यम आकार के अरबी के पत्ते।
- **बेसन का पेस्ट:** 1.5 कप बेसन, 1 बड़ा चम्मच अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, 1/2 छोटा चम्मच हल्दी, 1 छोटा चम्मच लाल मिर्च पाउडर, 1 छोटा चम्मच धनिया-जीरा पाउडर, 1/4 छोटा चम्मच हींग।
- **खट्टा-मीठा स्वाद:** 3 बड़े चम्मच इमली का गूदा (पल्प), 2 बड़े चम्मच गुड़।
- **तड़का (छौंक):** 2 बड़े चम्मच तेल, 1 बड़ा चम्मच सफेद तिल, 1 छोटा चम्मच राई, एक चुटकी हींग।

बनाने की विधि

1. **पत्तों को तैयार करें :** अरबी के पत्तों को पानी से अच्छी तरह धोकर सुखा लें। पत्तों को उल्टा घुमाएं और एक तेज चाकू की मदद से बीच की मोटी नस और साइड की नसों को काटकर अलग कर दें। इससे पत्ते आसानी से मुड़ सकेंगे।
2. **गाढ़ा पेस्ट बनाएं :** एक बर्तन में बेसन, सभी मसाले, इमली का गूदा और पिघला हुआ गुड़ मिलाएं। अब इसमें बहुत थोड़ा सा पानी डालकर एक गाढ़ा पेस्ट (टूथपेस्ट जैसा) तैयार करें। पेस्ट पतला नहीं होना चाहिए।
3. **परत लगाएं और रोल करें :** सबसे बड़े पत्ते को उल्टा (चिकना हिस्सा नीचे) करके रखें। इस पर बेसन के पेस्ट की एक पतली परत लगाएं। अब इसके ऊपर दूसरा पत्ता उलटी दिशा में रखें और फिर से पेस्ट लगाएं। इसी तरह 4-5 पत्तों की परतें बना लें। अब दोनों किनारों को अंदर की तरफ मोड़ते हुए नीचे से ऊपर की ओर एक कसकर रोल (log) बना लें।
4. **भाप में पकाएं (स्टीम) :** स्टीमर या एक बड़े बर्तन में पानी गर्म करें। स्टीमर की जाली पर थोड़ा तेल लगाएं और इन रोल्स को रखकर ढक दें। मध्यम-तेज आंच पर 20 मिनट तक भाप में पकाएं। पकने के बाद इन्हें बाहर निकालें और पूरी तरह ठंडा होने दें।
5. **काटें और तड़का लगाएं :** ठंडे हो चुके रोल्स को आधे इंच के गोल टुकड़ों (pinwheels) में काट लें। एक पैन में तेल गर्म करें, उसमें राई, सफेद तिल और हींग डालें। जब मसाले चटकने लगें, तो पात्रा के टुकड़ों को पैन में रखें और दोनों तरफ से सुनहरा और कुरकुरा होने तक शैलो फ्राई करें।

कॉर्न वड़ी

मानसून का नाम आते ही भुट्टे की याद आती है। साधारण उबले या सिके हुए भुट्टे से अलग, यह रेसिपी ताजे मकई के दानों को पीसकर, भाप में पकाकर और फिर तलकर बनाई जाती है। इसका मीठा, तीखा और मसालेदार स्वाद बारिश के दिनों के लिए एकदम सही है।

आवश्यक सामग्री

» **मुख्य सामग्री :** 2 कप ताजे मकई के दाने (स्वीट कॉर्न या देसी भुट्टा, दरदरा पिसा हुआ)।

» **बेसन का पेस्ट:** 1/2 कप बेसन, 2 बड़े चम्मच चावल का आटा (कुरकुरेपन के लिए)।

» **मसाले और खुशबू :** 1 बड़ा चम्मच हरी मिर्च-अदरक का पेस्ट, 1/4 कप बारीक कटा हरा धनिया, 1/2 छोटा चम्मच हल्दी, 1 छोटा चम्मच गरम मसाला, 1 छोटा चम्मच नींबू का रस, स्वादानुसार नमक।

» **तड़का (छौंक):** तेल (शैलो या डीप फ्राई करने के लिए)।

बनाने की विधि

1. **मकई को दरदरा पीसें :** ताजे मकई के दानों को मिक्सी में डालकर पल्स मोड पर दरदरा पीस लें। ध्यान रहे कि पीसते समय पानी का बिल्कुल भी इस्तेमाल नहीं करना है, क्योंकि मकई का अपना प्राकृतिक रस ही काफी होता है।
2. **मिश्रण तैयार करें :** एक बड़े कटोरे में दरदरा पिसा हुआ कॉर्न, बेसन, चावल का आटा, अदरक-मिर्च का पेस्ट, हरा धनिया, हल्दी, गरम मसाला, नींबू का रस और नमक एक साथ मिलाएं। इसे अच्छी तरह हाथ से मिलाते हुए एक गाढ़ा मटीरियल तैयार कर लें।
3. **थाली में जमाकर भाप दें :** एक स्टील की थाली या बेकिंग टिन में थोड़ा सा तेल लगाकर चिकना कर लें। तैयार मिश्रण को थाली में डालकर चारों तरफ आधा इंच की मोटाई में बराबर फैला दें। अब इसे स्टीमर में रखकर 15 मिनट के लिए भाप में पकाएं। जब चाकू साफ बाहर आए, तो समझें यह पक गया है।
4. **टुकड़ों में काटें और तलें :** मिश्रण को थोड़ा ठंडा होने दें, फिर इसे चाकू की मदद से चौकोर या बर्फी के आकार (डायमंड शेप) में काट लें। एक कढ़ाई में तेल गर्म करें और इन वड़ियों को मध्यम आंच पर दोनों तरफ से गहरा सुनहरा और क्रिस्पी होने तक तल लें। इसे गरमा-गरम पुदीने की चटनी और चाय के साथ परोसें।

SATYA

सर्वे भवन्तु सुखिनः

Corporate Office : SATYA Tower, Plot No 7A,
Sector 125, Noida, Uttar Pradesh - 201301
Phone : (+91-20) 6534 444

Registered Office : 519, 5th Floor, DLF Prime
Tower, Block- F, Okhla Phase-1, New Delhi - 110020
Phone : (+91-11) 4972 4000

info@satyamicrocapital.com

www.satyamicrocapital.com

SCAN HERE